Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-60-64

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 60-64

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. जयकुमार
हिन्दी विभाग,
दयाल सिंह कॉलेज, करनाल,
(हरियाणा) -132001.

Corresponding Author :
डॉ. जयकुमार
हिन्दी विभाग,
दयाल सिंह कॉलेज, करनाल,
(हरियाणा) -132001.

हिन्दी साहित्य में शोध प्रविधियां : सिद्धांत, व्यवहार एवं चुनौतियाँ

प्रस्तावना : मनुष्य में जन्मजात एक ऐसी प्रवृति होती है, जो सृष्टि को समझने, जीवन को जानने, प्रकृति एवं परिवेश को पहचानने और अपनी अतृप्त अंतरात्मा की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए अनुसंधान की दिशा में अग्रसर करती है। जिससे वह अनुसंधान द्वारा अज्ञानान्धकार की परत को हटाकर, अपनी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास करता है। ज्ञान की खोज के लिए शोध एक क्रमबद्ध, वैज्ञानिक और तर्कसंगत प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी भी विषय, समस्या तथा तथ्य के अन्य पक्षों को समझने का प्रयास होता है। शोध केवल तथ्यों का संकलन मात्र नहीं होता अपितु एक सुसंगठित प्रणाली होती है, जो अनुभूत, ज्ञान, अवलोकन, प्रशिक्षण एवं विश्लेषण के आधार पर ही निष्कर्ष तक पहुंचने में सहायता करती है। शोध को प्रभावी तथा उद्देश्य पूर्ण बनाने के लिए कतिपय निश्चित पद्धतियों और प्रविधियों का अनुसरण किया जाता है, जिन्हें 'शोध की पद्धतियां' कहा जाता है। वर्तमान युग में शोध का महत्त्व अनुवरत बढ़ता जा रहा है। शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, भाषा, समाज, इतिहास, मनोविज्ञान आदि विविध क्षेत्रों में शोध कार्य हो रहे हैं और उनकी अपनी-अपनी विशेष प्रविधियों होती है। मनुष्य ने सत्य को समझ कर सिद्धांत बनाएं, तथ्यों का संकलन कर ज्ञान और अनुभव के आधार पर तर्काश्रित सूत्र और विवेचन विश्लेषण की शोध प्रविधियों को बनाया। शोधकर्त्ता इन शोध प्रविधियों के माध्यम से ही समस्याओं की पहचान कर उनके कारणों की खोज एवं तथ्यों का संकलन कर निष्कर्ष निकालते हैं।

सही अर्थों में शोध का अर्थ अंधकार में आच्छन्न सत्य को आलोक प्रदान करना, मृतप्राय तथ्य को अमृत प्रदान कर संजीव-सार्थक करना है अस्पष्ट एवं अज्ञात ज्ञान क्षेत्र को स्पष्ट एवं ज्ञात कर जानकारी प्राप्त करना, प्रकृति के गर्भ एवं गर्त में छिपी विस्तीर्ण-विकिर्ण विच्छिन्न अव्यवस्थित ज्ञान संपदा को व्यवस्थित करना, उपलब्ध ज्ञान-राशि को आधुनिक दृष्टि से आंकना तथा नवीन दृष्टि से व्याख्यायित

करना, ज्ञानातीत अनुसंधान की कठिन-कठोर प्रामाणिक प्रक्रिया है। इसमें शोध पद्धतियां ही शोधकर्त्ता को अध्ययन की दिशा प्रदान करती हैं, जिससे उसे समस्या के अध्ययन एवं उससे संबंधित जानकारी प्राप्त करने का मार्ग तथा ज्ञान प्राप्त होता है। सही अर्थों में शोध हिंदी साहित्य में वर्णनात्मक अनुसंधान, विश्लेष्णात्मक अनुसंधान, ऐतिहासिक अनुसंधान, सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान, यथास्थितिवादी अनुसंधान, तुलनात्मक अनुसंधान, समीक्षात्मक अनुसंधान, सृजनात्मक अनुसंधान आदि शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

शोध प्रविधि और सिद्धांत -

शोध एक गहन बौद्धिक प्रक्रिया है, जिसमें सिद्धांत एक मूलभूत विचार या दर्शन होता है, जो शोध की प्रक्रिया के दृष्टिकोण, स्वरूप एवं दिशा को निर्धारित करता है। सिद्धांत का अर्थ उन दार्शनिक या वैचारिक ढांचों से होता है, जिसके आधार पर ही शोध की रूपरेखा तैयार की जाती है। "सिद्धांत का विकास अनुसंधान पर निर्भर करता है और अनुसंधान सिद्धांतों पर निर्भर होता है, क्योंकि अनुसंधान आवश्यक आंकड़े के संदर्भ में सिद्धांत का मार्गदर्शन करते हैं। इसलिए अनुसंधान कार्य सिद्धांतों की प्रगति के लिए साधन का काम करता है।"[1] किसी विषय को देखने का दृष्टिकोण, उसका मूल्यांकन करने एवम् निष्कर्ष निकालने के लिए आधार भी सिद्धांत से ही निर्धारित होता है। शोधकर्त्ता की विचारधारा, अनुभव, अध्ययन पद्धति और सामाजिक संवेदना सभी मिलकर, सिद्धांत अन्तर्निहित शोध की रूपरेखा तय करते हैं। शोध में सिद्धांत शोधकर्त्ता को एक दार्शनिक या वैचारिक फ्रेमवर्क देता है, जो शोधकर्त्ता को निर्णय लेने में सहायता करता है कि वह अध्ययन को किस दिशा में ले जाना चाहता है। एल. एन. कोठारी के अनुसार- "शोधकर्त्ता ठोस और औपचारिक सिद्धांतों का निर्माण, विस्तार, परीक्षण और सत्यापन करते हैं। सामाजिक वास्तविकता में मूल सिद्धांत एक विशेष सामग्री या विषय क्षेत्र पर केंद्रित होता है।"[2] हिंदी साहित्य में इसका विशेष रूप से महत्त्व हो जाता है क्योंकि साहित्य केवल शब्दों का संकलन मात्र नहीं होता, अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक तथा वैयक्तिक चेतना के दर्पण का कार्य भी करता है। 'पॉजिटिविज्म सिद्धांत' में शोधकर्त्ता तर्कसंगत, वस्तुनिष्ठ और प्रमाण आधारित दृष्टिकोण अपनाता हैं, जिसमें तटस्थता एवं तथ्यपरखता को महत्त्व दिया जाता है। इसके विपरीत व्याख्यात्मक या इंटरप्रेटेटिव दृष्टिकोण अपनाता हैं, जिसमें वह विषय की व्याख्या करना, अनुभव तथा संदर्भों का ज्ञान प्राप्त करता है। विनय कुमार पाठक लिखते है कि "पद्धतिगत अध्ययन किसी भी विषय पर लागू किया जा सकता है। साहित्य पर किए जाने वाले शोध कार्य के लिए किन्ही विशिष्ट पद्धतियों के आविष्कार की आवश्यकता नहीं होती। अंतर केवल अनुसंधेय विषय-वस्तु का होता है।"[3] 'कंस्ट्रक्तिविष्ट सिद्धांत' हिंदी साहित्य में विशेष रूप से उपयोगी है, जिसमें किसी रचना पर पाठक व समीक्षक अपने अनुभव तथा विचारानुसार अर्थ निकालता है। 'उत्तर-संरचनावादी' भी इसी से जुड़ा सिद्धांत है, जिसके अनुसार किसी भी पाठ का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता बल्कि बाहुल्य अर्थ होते हैं। यह अर्थ भाषा, संदर्भ, पाठक तथा समाज के अनुसार भी बदलते रहते हैं। सामाजिक सरोकारों, असमानताओं, सत्ता-संबंधों और हाशिए के स्वर को शोध प्रविधि में समझने के लिए आलोचनात्मक सिद्धांत की सहायता ली जाती है। इस सिद्धांत में साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का औजार मानते हुए राजनीति, सांस्कृतिक या लैंगिक सभी प्रकार के सवाल उठाए जाते हैं।

स्त्रीवादी और दलित सिद्धांत भी इसी विचारधारा से प्रेरित होकर उभरते हैं, जो इस शोध प्रक्रिया को लोकतांत्रिक एवं बहुस्तरीय बनाने का कार्य करते हैं। नारीवादी सिद्धांत शोध में इस दृष्टिकोण को सामने लाता है, जो स्त्री की भूमिका, अस्मिता, संघर्ष और चेतना को केंद्र में रखकर दिखाता है कि वह पारंपरिक पितृसतात्मक दृष्टिकोण द्वारा उपेक्षित रही है। यह दृष्टिकोण स्त्री और दलित पात्रों की न केवल आलोचना करता है अपितु उनके अनुभव, आत्मलेखन और भाषा अनुसंधान का विषय भी बनाता है। 'उत्तर औपनिवेशिक सिद्धांत' की अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, जो

उपनिवेशवाद के प्रभावों की पड़ताल और मानसिकता की आलोचना करता है। एल. एन. कोठारी ने शोध पद्धति में बताया है- "जब औपनिवेशिक वर्चस्व के विकसित होने का कारण, देश का लंबे समय तक उपनिवेशित रहना है, जिसका गहरा प्रभाव साहित्य पर भी देखा जा सकता है। इस सिद्धांत में सांस्कृतिक अस्मिता, भाषिक स्वाधीनता और स्वदेशी चेतना को प्रमुखता दी जाती है।"[4] इसीलिए शोध कार्य में सिद्धांत की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और यह शोध और अनुसंधान के लिए अपरिहार्य होता है।

शोध प्रविधि और व्यवहार -

हिंदी साहित्य में शोध केवल साहित्यिक कृतियों की जानकारी तक ही सीमित नहीं रहता, अपितु उसके अन्तर्निहित संदर्भ, दृष्टिकोण, अर्थ एवं सामाजिक प्रभावों का उचित विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है। किसी शोध की सफलता उसकी विषय-वस्तु पर ही केवल आश्रित नहीं होती, उसके व्यावहारिक पक्ष की सुदृढ़ता और कार्य करने की विधि पर भी आश्रित होती है। शोध की वास्तविकता तभी साकार हो सकती है, जब शोधकर्त्ता में सैद्धांतिक ज्ञान को व्यवहार में लाने की क्षमता हो। "शोधक की प्रतिभा और शोध-विषय के संपर्क से शोध-बोध का विकास होता है। प्रतिभा शोधकर्त्ता के भीतर होती है और शोध विषय बाहर। भीतर-बाहर के सानिध्य से सारे ज्ञान-विज्ञान का उदय होता है।"[5] विषय की चयन द्वारा व्यावहारिक अनुसंधान की शुरुआत होती है, जिसमें विषय चयन केवल रुचि के आधार पर ही नहीं अपितु सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, शोध की संभावनाओं तथा प्रविधियों की अनुरूपता के आधार पर होता है। शोधार्थी को विषय वस्तु से जुड़े लेखन, साहित्य, युग और विमर्श को समझना तथा उनकी सम्यक जानकारी रखना आवश्यक होता है। हरिश्चंद्र वर्मा के अनुसार- "विज्ञान का स्वभाव यथार्थता या वास्तविकता के विश्वसनीय ज्ञान का मुक्त मस्तिष्क से अनुसंधान करना है, भले ही यह यथार्थता प्राकृतिक हो या सामाजिक।"[6] जबकि साहित्य में यह कार्य अनेक प्राचीन ग्रंथ दुर्लभ पत्रिकाएं, पांडुलिपियों तथा व्यक्तिगत संकलन शोध के लिए जरूरी होते हैं, जो सरलता से प्राप्त नहीं हो पाते हैं। शोध प्रक्रिया में इन स्त्रोतों का संग्रह, उनका समुचित अध्ययन और उनकी प्रामाणिकता शोध की रीड होती है। विषय चयन के बाद ही शोध का सबसे जटिल और महत्त्वपूर्ण भाग का प्रारंभ होता है, जिसमें वास्तविक लेखन एवं विश्लेषण है। इसमें ही शोध प्रविधियों वास्तविक रूप में व्यवहार में आती हैं, जिसमें शोधार्थी विषयानुसार दृष्टिकोण का चयन करता है कि वह समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य से दिखेगा, ऐतिहासिक दृष्टिकोण अपनाएगा या मनो-वैज्ञानिक अध्ययन करेगा।

यह प्रविधि उसकी भाषा एवं प्रस्तुति की दिशा नहीं बनाती, बल्कि उसी के अनुरूप ही निष्कर्ष का आकार ग्रहण करती है। हरिश्चंद्र वर्मा ने शोध प्रविधि में कहा है कि "जिस प्रकार एक सफल और सार्थक जीवन जीने के लिए सुविचारित, सुनिश्चित जीवन-पद्धति आवश्यक है, उसी प्रकार एक सफल और सार्थक तथा उपलब्धिपूर्ण शोध के लिए एक विषयानुरूप, सही और सुनिर्धारित शोध-प्रविधि की आवश्यकता है।"[7] शोध के दौरान शोधकर्त्ता को यह ध्यान देना होता है कि उसकी विषय वस्तु में गहराई, शैली शोधपरक, तर्कसम्मत व वैज्ञानिक हो तथा कार्य मौलिक एवं उद्धृत सामग्री विधिवत संदर्भित हो। शोध कार्य में व्यावहारिक पक्ष में तकनीकी ज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। शोध प्रबंध में उद्धरण प्रणाली बिब्लियोग्राफी का निर्माण, अनुसंधान शैली (जैसे APA, MLA आदि) परिशिष्टों का संयोजन और अनुक्रमणिका की रचना ऐसे क्षेत्र हैं, जिनसे शोध की व्यावहारिक दक्षता परिभाषित होती है। इसके अतिरिक्त शोध की नैतिकता भी एक आवश्यक व्यावहारिक पक्ष है, जो शोधकर्त्ता की ईमानदारी, गंभीरता और बौद्धिक चरित्र का सूचक है। किसी के पूर्व प्रकाशित शोध कार्य को अपने नाम से प्रस्तुत करना, किसी स्त्रोत का उल्लेख किए बिना उसका प्रयोग, तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर उपयोग, शोध नैतिकता के विरुद्ध है। आज के डिजिटल युग में तकनीकी उपकरणों, लाइब्रेरी डेटाबेस, शोध सूचकांकों और डिजिटल अभिलेखों का समूचित उपयोग का शोधार्थी को ज्ञान अनिवार्य है और उसे

इंटरनेट, कंप्यूटर, वर्ड प्रोसेसिंग तथा पीडीएफ फॉर्मेटिंग आदि का भी व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है।

मार्गदर्शक की भूमिका भी शोध की प्रक्रिया में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है, जो अपने अनुभव और सहयोग से शोधकर्त्ता को विषय तक सीमित न करके, उसे विश्लेषण की तकनीकों, प्रविधियों और निष्कर्षों की प्रस्तुति के सभी स्तरों पर मार्गदर्शन करता है। इन पक्षों का ध्यान रखते हुए यह कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य में शोध का व्यावहारिक पक्ष जितना आवश्यक है उतना ही जटिल भी है, जो शोधार्थी को विषय की समझ, तकनीकी ज्ञान, नैतिकता, प्रस्तुति की शैली और प्रविधियों के व्यावहारिक प्रयोग में भी दक्षता प्राप्त करने की ओर प्रेरित करता है।

शोध प्रविधि और चुनौतियां-

हिंदी साहित्य का क्षेत्र विविधतापूर्ण एवं बहुआयामी है, जिसमें शोधकर्त्ता को शोध कार्य करते समय लेखकों, प्रवृत्तियों, साहित्यिक कृतियों और विचारधाराओं का गहराई से विश्लेषण करना होता है। "सरल शब्दों में कहें तो शोध को संसाधनों और सूचनाओं की एक व्यवस्थित और तार्किक जांच के रूप में देखा जा सकता है ताकि हम तथ्यों का पता लगा सकें। निष्कर्ष पर पहुंच सकें और नए परिणामों को समझ सकें। शोध का एक समान रूप से अनिवार्य हिस्सा सार्थक ज्ञान का प्रसार करना है।"[8] यह प्रक्रिया कई अनुसंधान प्रविधियों पर निर्भर होती है जैसे समाजशास्त्रीय, तुलनात्मक, आलोचनात्मक, ऐतिहासिक, मनोविश्लेणात्मक या अंतर्विषयक दृष्टिकोण। साहित्य को समझने के लिए शोध प्रवृत्तियां एक वैज्ञानिक औजार होती हैं, शोधार्थी जिनकी सहायता से साहित्यिक रचनाओं का मूल्यांकन एवं विवेचन करता है। किंतु इन शोध प्रविधियों के व्यवहार में कई प्रकार की चुनौतियां सामने आती हैं, जिनसे केवल शोध की गुणवत्ता ही नहीं प्रभावित होती, अपितु मौलिकता और उपयोगिता पर भी प्रश्नचिन्ह लगता है। डॉ. तिलक सिंह लिखते है- "शोध की समस्या हिंदी साहित्य तथा हिंदी-भाषा के साथ ही नहीं है अन्य साहित्येत्तर विषयों के साथ भी जुड़ी हुई है। ये समस्याएं अन्य विषयों की समस्याओं से हिंदी के साथ अधिक गंभीर है।"[9] शोध का विषय चयन हिंदी साहित्य में पहली बड़ी चुनौती होती है, शोधार्थी अक्सर उन विषयों की ओर आकर्षित होता है, जिन विषयों पर अनेक बार कार्य हो चुका होता है। सूर, तुलसी, निराला और प्रेमचंद आदि रचनाकारों पर इतने अधिक शोध कार्य हो चुके हैं कि अब इन क्षेत्रों में मौलिकता खोजना कठिन है। इनके विपरीत दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य और समकालीन साहित्य जैसे नवाचार क्षेत्र पर शोध कार्य अपेक्षाकृत कम हुए हैं। शोध प्रविधियों के विवेकपूर्ण उपयोग में यह विषय चयन दोहराव, बाधक बनता है क्योंकि जब विषय नया चुनौतीपूर्ण एवं विश्लेषण की मांग करने वाला होगा तो शोध प्रविधियों से उसे सही दिशा दी जा सकती है। विषय निर्वाचन शोधार्थी के लिए उस समय एक बहुत बड़ी समस्या बन जाती है जब विषय शोधार्थी की अभिरुचि, योग्यता तथा क्षमता को ध्यान में न रखकर निरीक्षक द्वारा शोधार्थी पर लाद दिया जाता है। शोध प्रविधियों के प्रयोग में एक अन्य गंभीर समस्या अस्पष्टता भी है, जिसमें शोधार्थी कई बार यह स्पष्ट नहीं कर पाता कि वह किस प्रविधि का प्रयोग कर रहा है।

आलोचनात्मक पद्धति में बिना किसी सैद्धांतिक आधार के लेखक की प्रशंसा की जाती है, ऐतिहासिक पद्धति के आधार पर केवल घटनाओं की समय रेखा प्रस्तुत की जाती है और तुलनात्मक अध्ययन में केवल दो रचनाओं का विवरणात्मक उल्लेख भर किया जाता है। शोध प्रविधियों के प्रशिक्षण एवं शिक्षा की कमी, इस समस्या की ओर संकेत करती है कि विश्वविद्यालयों में प्रविधियों का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राय: नहीं होता, जिस कारण शोधार्थी केवल प्रविधियों का केवल नाम जानते हैं, उन्हें गहराई से नहीं जानते हैं। शोध कार्यों को प्रामाणिक एवं गहन बनाने के लिए प्राथमिक स्रोत ग्रंथ, हस्तलिखित पांडुलिपियां या लेख पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध नहीं है और यदि हैं तो कम ही संग्रहालयों और पुस्तकालयों में बंद हैं। शोध कार्य में भाषा और लेखन की शुद्धता भी एक बड़ी चुनौती है, जिसमें भाषा

की अकादमिकता, स्पष्टता तथा शैली की गंभीरता की भी आवश्यकता होती है, परंतु कुछ शोधार्थी भावात्मक या साहित्यिक भाषा का प्रयोग करते हैं, जिस कारण विचारों की स्पष्टता धूमिल हो जाती है।

वर्तमान समय में शोध प्रकाशन एवं मूल्यांकन में भी पारदर्शिता की कमी है, शोध गुणवत्तारहित व्यक्ति अपने विशेष प्रभाव से प्रकाशन में प्राथमिकता पा जाता है। हिंदी साहित्यिक पारंपरिक साधनों पर निर्भर होने के कारण डिजिटल डेटाबेस, ई-लाइब्रेरी, साहित्यिक कोर्पस और शोध लेखों के लिए ऑनलाइन सर्च इंजन जैसी सुविधाएं हिंदी साहित्य में बहुत सीमित हैं। साहित्य के शोधकर्त्ताओं को तकनीकी उपकरणों, लाइब्रेरी डेटाबेस, डिजिटल अभिलेख, शोध सूचकांको का समुचित प्रयोग इंटरनेट सर्च, वर्ड प्रोसेसिंग, पीडीएफ फॉर्मेटिंग आदि का ज्ञान होना भी आवश्यक है। शोध कार्य में "व्यक्तिगत दृष्टि-दोष से उत्पन्न दुराग्रह तथ्यों और तर्कों को किनारे छोड़कर, पक्षपातपूर्ण निर्णय की विवेकशून्य दिशा में उन्मुख करता है शोध में किसी भी प्रकार की वैचारिकी, संकीर्णता, सांप्रदायिकता, पक्षपात आदि के लिए कोई अवकाश नहीं है।"[10] शोधार्थी को चुनौतियों को पहचान कर, उनका समाधान करने और शोध को केवल उपाधि प्राप्ति न मानकर, साहित्य को समझने की सच्ची साधना करनी चाहिए।

निष्कर्ष : हिंदी साहित्य में शोध एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है, जो केवल हमें साहित्यिक कृतियों की जानकारी ही नहीं देती अपितु उसके अंतर्निहित संदर्भ, दृष्टिकोण, अर्थ एवं सामाजिक प्रभावों का ज्ञान तथा विश्लेषण की दिशा भी प्रदान करती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य का शोध कार्य केवल औपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया नहीं होता बल्कि वह एक सृजनात्मक, सांस्कृतिक और विचारपूर्ण अनुसंधान की प्रक्रिया है, जो शोधकर्त्ता से विवेकशीलता, निरंतरता और गहराई से अध्ययन की अपेक्षा करती है। अनुसंधान में यही प्रतिबद्धता तथा निरंतरता हिंदी साहित्य में शोध को अधिक प्रभावशाली, समृद्ध एवं प्रामाणिक बना सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूंची -

1. कोठारी एल. एन., 2024, शोध पद्धति, प्रथम संस्करण, एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ-207.
2. कोठारी एल. एन., 2024, शोध पद्धति, प्रथम संस्करण, एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ-211.
3. पाठक डॉ. विनय कुमार, शुक्ला डॉ. (श्रीमती) जयश्री, 2010, अनुसंधान-प्रविधि और प्रक्रिया, प्रथम संस्करण, भावना प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ-89.
4. कोठारी एल. एन., 2024, शोध पद्धति, प्रथम संस्करण, एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ-207.
5. वर्मा, डॉ. हरिश्चंद्र, 2006, शोध प्रविधि, प्रथम संस्कण, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृष्ठ-48.
6. मिश्र, डॉ. कैलाशनाथ, 1990, हिंदी अनुसंधान: वैज्ञानिक पद्धतियां, प्रथम संस्करण, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ-32.
7. वर्मा, डॉ. हरिश्चंद्र, 2006, शोध प्रविधि, प्रथम संस्कण, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृष्ठ-102.
8. कोठारी एल. एन., 2024, शोध पद्धति, प्रथम संस्करण, एकैडमिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ-47.
9. सिंह, डॉ. तिलक, 2011, नवीन शोध विज्ञान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृष्ठ-240.
10. वर्मा, डॉ. हरिश्चंद्र, 2006, शोध प्रविधि, प्रथम संस्कण, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, पृष्ठ-210.

•